## वर्ड स्मिथ

### हेलो शब्द की उत्पत्ति

अक्सर इस्तेमाल होने वाला शब्द 'हेलो' सुनने में भले ही साधारण लगे, लेकिन इसका इतिहास काफी दिलचस्प है। कुछ भाषाविदों के अनुसार यह शब्द प्राचीन फ्रांसीसी शब्द Hola से निकला है, जिसका अर्थ होता है-'कैसे हो'। माना जाता है कि 1066 ईस्वी में नॉर्मन आक्रमण के दौरान यह शब्द फ्रांस से इंग्लैंड पहुंचा। समय बीतने के साथ इसका उच्चारण और स्वरूप बदलता चला गया।

चौदहवीं सदी में अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि जेफ्री चॉसर के दौर तक यह शब्द Hallow कहलाने लगा। इसके लगभग दो सौ वर्ष बाद, शेक्सपियर के समय में इसका रूप बदलकर Halloo हो गया। शिकारियों और नाविकों की बोलचाल में आते-आते इसके कई रूप प्रचलन में आए, जैसे- Hallloa, Hallooa, Hollo।

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत तक यह शब्द अपने एक निश्चित रूप Hullo में स्थिर हो चुका था। इसके बाद टेलीफोन के आविष्कार ने इस शब्द को पूरी दुनिया में लोकप्रिय बना दिया। शुरुआती दिनों में लोग फोन पर बात शुरू करते समय "Are you there?" कहा करते थे, क्योंकि उन्हें अपनी आवाज के पहुंचने पर संदेह रहता था। अमेरिकी आविष्कारक थॉमस एडिसन ने इस झिझक को खत्म किया और पहली कॉल पर सिर्फ एक शब्द कहा- Hello। तभी से यह शब्द बातचीत की शुरुआत का सार्वभौमिक माध्यम बन गया।

## नोटिस बोर्ड

- बरेली कॉलेज बरेली के दर्शन शास्त्र के प्रभारी ने बताया कि तृतीय सेमेस्टर के एसाइनमेंट के साथ अपना रिसर्च प्रोजेक्ट जमा करने की अंतिम तारीख 15 जनवरी है। दर्शनशास्त्र विषय के बीए प्रथम सेमेस्टर और बीए तृतीय सेमेस्टर के मेजर और माइनर में फिलॉसफी विषय के सभी छात्र अपना असाइनमेंट तय समय में जमा कर दें।

- गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय (मुरादाबाद) ने शिक्षा सत्र 2025-26 की स्नातक एवं परास्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाओं का प्रारंभिक परीक्षा कार्यक्रम जारी कर दिया है। स्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 12 जनवरी से 11 फरवरी तक चलेंगी, जबकि परास्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 15 जनवरी से शुरू होंगी। स्नातक की परीक्षाएं सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक और परास्नातक की परीक्षाएं दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक आयोजित की जाएंगी। पहले दिन स्नातक प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं 12 जनवरी (सोमवार) से शुरु परीक्षाओं का समय सुबह 11 से दोपहर एक बजे तक रहेगा।

# स्मॉग के दौर में सांसों की सुरक्षा

## आईआईटी कानपुर की स्मार्ट 'आयरन लंग'






सर्दी के मौसम में दिल्ली समेत उत्तर भारत के अधिकतर शहरों में बढ़ते वायु प्रदूषण से कमजोर होते फेफड़ों को अब घर बैठे आसानी से मजबूत बनाया जा सकेगा। इस काम के लिए आईआईटी कानपुर ने पारंपरिक 'आयरन लंग' मशीन के स्थान पर एक आधुनिक 'आयरन लंग' डिवाइस विकसित की है। यह डिवाइस फेफड़ों के व्यायाम और स्वास्थ्य की निगरानी के लिए एक स्मार्ट रेस्पिरेटरी कंडीशनिंग सिस्टम जैसी है। इससे चिकित्सा क्षेत्र में खासकर फेफड़े से संबंधित रोगों से पीड़ित लोगों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। खासतौर पर बच्चों और बुजुर्गों को फेफड़े से जुड़ी समस्या का सबसे ज्यादा सामना करना पड़ता है। ऐसे में आईआईटी कानपुर की सेंसर आधारित डिवाइस से उनके लिए फेफड़ों की मॉनिटरिंग करना बेहद आसान हो जाएगा। यह डिवाइस वायु प्रदूषण या अन्य स्थितियों के कारण कमजोर हुए फेफड़ों को मजबूत करने के लिए व्यायाम करने में मदद करती है। इसे फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है।

*-मनोज त्रिपाठी, कानपुर*

### जिम और घर दोनों जगह कर सकते हैं इस्तेमाल

'आयरन लंग' स्मार्ट वेलनेस डिवाइस को आईआईटी कानपुर के इन्क्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर के स्टार्टअप मेदांत्रिक ने काफी कम लागत में विकसित किया है। इसे चलाना काफी आसान है। यह डिवाइस पारंपरिक 'आयरन लंग' मशीन जो कि एक बड़ा बेलनाकार वेंटिलेटर था और जिसे पोलियो महामारी के दौरान बनाया गया था, के विपरीत एक आधुनिक, एआई-पावर्ड श्वसन प्रशिक्षण उपकरण है। यह डिवाइस हर रोज फेफड़े की एक्सरसाइज कराती है और तुरंत यह परिणाम भी बताती है कि आपकी एक्सरसाइज से फेफड़ों को कितना लाभ मिला है। ट्रेडमिल की तरह यह मशीन जिम और घर दोनों जगह इस्तेमाल की जा सकती है। मेद्रांत्रिक के सीईओ प्रियरंजन तिवारी ने बताया कि इस डिवाइस की मदद से फेफड़ों का रोज व्यायाम कराया जा सकता है। इससे फेफड़ों को मजबूती मिलती है। उनके मुताबिक इस डिवाइस को अलग-अलग उम्र और शारीरिक बनावट वाले लोगों के लिए अलग-अलग मोड में काम करने के लिए तैयार किया गया है। इसकी तकनीक को पेटेंट कराया जा चुका है, अब यह प्रोडक्ट के रूप में बाजार में आने के लिए तैयार है।

### 15 मिनट की एक्सरसाइज से फेफड़े स्वस्थ

इस डिवाइस में एक कुर्सी, मानीटर, श्वसन व्यायाम टूल को आपस में जोड़ा गया है। इस पूरे सेट की कीमत करीब 55 हजार रुपये है। डिवाइस में हर व्यक्ति को अपने लिए अलग स्मार्ट कार्ड लगाना होगा। इस स्मार्ट कार्ड में उपयोगकर्ता की उम्र, वजन, लंबाई और क्षेत्र की जानकारी दर्ज रहेगी। इसी आधार पर फेफड़े की आदर्श स्थिति की एक रिपोर्ट डिवाइस तैयार कर देगी। इसमें लोगों के फेफड़ों की कार्यक्षमता के अनुरूप व्यायाम विशेषज्ञों के सुझाए तरीकों को हिस्सा बनाया गया है। इससे व्यायाम करते समय की जाने वाली गलतियों की जानकारी मिलेगी और सही तरीके से व्यायाम करना सीखा जा सकेगा। इससे श्वसन क्षमता को बढ़ाने में सुविधा मिलेगी। इस डिवाइस के जरिए प्रतिदिन 15 मिनट व्यायाम करने से ही एक हफ्ते में फेफड़ों की स्थिति में सुधार होने लगता है। इस डिवाइस में लगने वाले श्वांस लेने वाले उपकरण की कीमत 100 रुपये रखी गई है, जिसे डिवाइस में आसानी से फिट किया जा सकता है।

### पुरानी आयरन लंग मशीन की कहानी

आयरन लंग एक पुरानी बड़ी धातु की मशीन है, यह उन लोगों को सांस लेने में मदद करती थी, जिनकी श्वसन मांसपेशियां लकवाग्रस्त हो जाती थीं। यह मशीन एक वायुरोधी सिलेंडर होती है, जिसमें मरीज का शरीर अंदर रहता है और सिर बाहर रखकर उसे लिटाया जाता है। इस तरह मशीन अंदर के शरीर में हवा के दबाव को बदलकर फेफड़ों को फैलाने और सिकोड़ने में मदद करती है, इससे प्राकृतिक रूप से सांस लेने जैसा प्रभाव पैदा होता है। इस मशीन का आविष्कार 1920 के दशक में पोलियो के गंभीर मामलों के इलाज के लिए किया गया था, जब मांसपेशियों के लकवाग्रस्त होने के कारण मरीज सांस नहीं ले पाते थे।



### 70 साल तक लोहे के फेफड़ों से सांस लेते रहे अलेक्जेंडर

पॉल अलेक्जेंडर ने अपनी जिंदगी के 70 साल आयरन लंग मशीन में बंद होकर गुजारे थे। उन्हें 6 साल की उम्र में साल 1952 में पोलियो हो गया था। पॉल का जन्म अमेरिका में वर्ष 1946 में हुआ था और 1952 में अमेरिका में इतिहास का सबसे बड़ा पोलियो फैला था। यह बीमारी इतनी तेजी से फैल रही थी कि हजारों बच्चे इसका शिकार हो गए थे। इनमें पॉल भी शामिल थे। उनके शरीर में गर्दन के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त होने के कारण काम नहीं कर रहा था। इससे उन्हें सांस लेने में दिक्कत होने लगी। ऐसे में एक बार उन्होंने आयरन लंग मशीन की शरण ली, तो फिर उससे बाहर ही नहीं निकल पाए। पिछले साल 78 साल की उम्र में पॉल का निधन हो गया था। इसके साथ ही पॉल इतिहास में सबसे लंबे वक्त तक मशीनी फेफड़ों का इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति बन गए। इसके लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पहले ही दर्ज किया जा चुका था।

## कैंपस में पहला दिन: गिरते-पड़ते पाला छूने की कहानी

बारहवीं हमने किसी मेरिट की सीढ़ी चढ़कर नहीं, बल्कि सब्सिडी वाले अंकों के सहारे पास की थी। यूं समझिए, गिरते-पड़ते किसी तरह पाला छू लिया था। देहात से शहर तक की पढ़ाई पूरी तरह साइकिल पर टिकी हुई थी। पंद्रह किमी के रास्ते में कभी चेन उतर जाती, कभी पंचर मुंह चिढ़ा देता। ऐसे में देर होना कोई अपवाद नहीं, रोजमर्रा की नियति थी। इंटर कॉलेज में अनुशासन कोई नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि एक कठोर भौतिक सत्य था। शार्प टाइम पर गेट पर ताला पड़ जाता और उसके बाद गुरुजनों से करुणा की अपेक्षा करना वैसा ही था जैसे तपती दुपहरी में ओस खोज लेना। समय पर पहुंच भी जाएं, तो कक्षा में डेढ़ सौ से अधिक विद्यार्थी ठुंसे रहते। ट्यूशन पढ़ने वाले भीमकाय, बलिष्ठ छात्र आगे की कतारों में विराजमान रहते। हम जैसे बैक-बेंचर्स तक न आवाज पहुंचती थी, न उम्मीद। धीरे-धीरे हम उन्हीं छात्रों की संगत में जाने लगे, जिन्हें व्यवस्था पहले ही 'फेलियर' घोषित कर चुकी थी। कक्षाएं बंक करना आदत नहीं, मजबूरी बन गया।

ललित मोहन रयाल
जिलाधिकारी नैनीताल

नतीजा वही निकला, जो निकलना था। यूजी की पहली सूची में हमारा नाम नहीं था। जिस विषय में कृपावश ग्रेस मिला था, वही हमने स्नातक में चुन लिया-यह आत्मविश्वास कम, दुस्साहस ज्यादा था। दो-तीन हफ्ते भारी उधेड़बुन में बीते। उस उम्र में ऊर्जा अतिरिक्त होती है। ऐसी कि एड़ी जमीन पर मारो तो लगे, पानी फूट पड़ेगा। खैर, अन्य विषयों में अंक औसत थे। दूसरी सूची में मनोवांछित विषय मिल गया। प्रवेश मिलते ही लगा- जैसे किसी डूबते को तिनका नहीं, पूरी नाव मिल गई हो। जान बची, तो लाखों पाए- यह भाव भीतर तक समा गया।

1992 का साल था। महाविद्यालय पहुंचे तो कहानी ने नया मोड़ नहीं लिया। कॉन्वेंट, केन्द्रीय विद्यालय, मॉडर्न स्कूल और हमारे इंटर कॉलेज, सबके छात्र वहां मौजूद थे। देहात का स्वाभिमान कुछ अलग किस्म का होता है- वह स्वावलंबन पर ज्यादा टिकता है। देहाती युवक की उनसे न पटरी बैठी थी, न बैठने वाली थी। ऊपर से समय-सारिणी का झंझट। फिजिक्स की कक्षा सुबह नौ बजे, प्रैक्टिकल ग्यारह बजे। रसायन शास्त्र एक बजे, उसका प्रैक्टिकल तीन बजे। गणित चार बजे। टाइम-टेबल ऐसा कि पढ़ाई से ज्यादा धैर्य की परीक्षा ले। हम देहाती युवक थे। खेती-किसानी, घर-बाहर- सबमें हाथ बंटाना पड़ता था। ऐसे में इस समय-सारिणी के मुताबिक चलना हमारे लिए कठिन नहीं, असंभव का पर्याय था। हम नियमित रूप से अनियमित होते चले गए। पर मन में एक बात गहरे बैठ चुकी थी- पाठ्यक्रम को साल भर में दो-चार बार आर-पार किए बिना आगे की राह नहीं खुलेगी। इसी समझ ने हमें स्वावलंबन की ओर धकेला। गुरु, कक्षा और घंटी के भरोसे रहने के बजाय हमने खुद से पढ़ना सीख लिया। शायद वहीं से शिक्षा का असली पाठ शुरू हुआ, जब डिग्री नहीं, समझ लक्ष्य बन गई।

## करंट अफेयर्स

- हाल ही में भारतीय वायु सेना (IAF) में एक महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन हुआ है, जिसमें एयर मार्शल नागेश कपूर ने वाइस चीफ ऑफ द एयर स्टाफ का पद संभाला। लगभग 40 वर्षों की उत्कृष्ट सेवा के साथ, वे गहन संचालन, प्रशिक्षण और रणनीतिक अनुभव लाते हैं। उनकी नियुक्ति उस समय वायु सेना के शीर्ष नेतृत्व को मजबूत करती है, जब बल प्रशिक्षण आधुनिकीकरण, हवाई रक्षा तैयारी और परिचालन तत्परता पर केंद्रित है।
- भारतीय सेना ने हाल ही में अपनी परिचालन क्षमताओं के आधुनिकीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए वर्ष 2026 को 'नेटवर्किंग एवं डेटा-केंद्रितता का वर्ष' घोषित किया है। यह घोषणा जनवरी 2026 में थल सेनाध्यक्ष (COAS) जनरल उपेन्द्र द्विवेदी के नेतृत्व में की गई, जो भविष्य के लिए तैयार, प्रौद्योगिकी-आधारित सेना के निर्माण की दीर्घकालिक दृष्टि का हिस्सा है। यह पहल डिजिटल एकीकरण, रियल-टाइम डेटा साझा करने और डेटा-आधारित निर्णय प्रक्रिया पर भारतीय सेना के बढ़ते फोकस को दर्शाती है, जो आधुनिक युद्ध के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।
- कर्नाटक के वन्यजीवों ने हाल ही में एक बार फिर राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है। राज्य में तेंदुए के एक अत्यंत दुर्लभ रंग-रूप (कलर वैरिएंट) की पहली बार पुष्टि हुई है, जिसे "सैंडलवुड लेपर्ड" नाम दिया गया है। यह खोज कर्नाटक में तेंदुओं की उल्लेखनीय आनुवंशिक विविधता को उजागर करती है और बड़े बिल्लीनुमा जीवों के संरक्षण के लिए भारत के सबसे महत्वपूर्ण परिदृश्यों में से एक के रूप में राज्य की प्रतिष्ठा को और मजबूत करती है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वाराणसी में आयोजित 72 वीं राष्ट्रीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। खिलाड़ियों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वॉलीबॉल में टीमवर्क, समन्वय और सामूहिक जिम्मेदारी जैसे मूल्य भारत की विकास यात्रा को भी प्रतिबिंबित करते हैं। इस आयोजन में देशभर की टीमों ने भाग लिया और यह खेल एवं युवा विकास पर सरकार के मजबूत फोकस को दर्शाता है।

## जॉब अलर्ट

### स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
- पद का नाम- स्पेशलिस्ट कैडर ऑफिसर (VP वेल्थ SRM, AVP वेल्थ RM, कस्टमर रिलेशनशिप एग्जीक्यूटिव)
- पदों की संख्या- 1146
- योग्यता- सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी या संस्थान से ग्रेजुएशन
- आयु सीमा- VP वेल्थ SRM: 26-42 वर्ष/AVP वेल्थ RM: 23-35 वर्ष/कस्टमर रिलेशनशिप एग्जीक्यूटिव: 20-35 वर्ष
- आवेदन की अंतिम तारीख- 10-जनवरी-2026
- वेबसाइट- sbi.bank.in

### एम.पी. राज्य सहकारी बैंक
- पद का नाम-कंप्यूटर ऑपरेटर, सोसायटी मैनेजर, ऑफिसर
- पदों की संख्या- (1763 क्लर्क + 313 ऑफिसर) 2076 पद
- योग्यता-स्नातक
- आयु सीमा-18 से 35 वर्ष (छूट के साथ 40 वर्ष), कंप्यूटर ऑपरेटर 18 से 55 वर्ष
- आवेदन अंतिम तारीख-05-फरवरी-2026
- वेबसाइट- apexbankmp.bank.in

### बैंक ऑफ इंडिया
- पद का नाम-अप्रेंटिस
- पदों की संख्या-400
- वेतन-13,000 रुपये प्रति माह
- योग्यता-किसी भी विषय में ग्रेजुएट डिग्री
- आयु सीमा-20 से 28 वर्ष
- आवेदन की अंतिम तारीख-10 जनवरी 2026
- वेबसाइट-www.bankofindia.bank.in

### उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

- पद का नाम-लेखपाल
- पदों की संख्या-7994
- योग्यता-प्रारंभिक पात्रता परीक्षा (PET-2025) पास होना चाहिए और आवश्यक शैक्षणिक योग्यता होनी चाहिए
- आयु सीमा- 18-40 वर्ष
- आवेदन की अंतिम तारीख- 28 फरवरी 2026
- वेबसाइट- upsssc.gov.in

# AI स्पेशलिस्ट बनकर करियर को दें डिजिटल उड़ान

डिजिटल युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तेजी से दुनिया की कार्यप्रणाली बदल रहा है। आज AI सिर्फ एक तकनीकी शब्द नहीं रह गया है, बल्कि यह हमारे रोजमर्रा के जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। मोबाइल फोन, बैंकिंग सेवाएं, हेल्थकेयर, शिक्षा, ई-कॉमर्स और ट्रांसपोर्ट- हर क्षेत्र में AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पहले जिन कामों को इंसान स्वयं करता था, अब वही कार्य मशीनें सीखकर स्वत: करने लगी हैं। चैटबॉट्स द्वारा ग्राहक सेवा, वॉइस असिस्टेंट्स से जानकारी प्राप्त करना, ऑनलाइन शॉपिंग में पसंद के अनुसार सुझाव मिलना या फिर सेल्फ-ड्राइविंग कारों का विकास- ये सभी AI तकनीक की देन हैं। इसी बढ़ते उपयोग के कारण AI आज करियर के सबसे आकर्षक विकल्पों में से एक बन गया है। कंपनियां अपने काम को अधिक तेज, सटीक और किफायती बनाने के लिए AI एक्सपर्ट्स को प्राथमिकता दे रही हैं। ऐसे में हर सेक्टर में AI से जुड़े प्रोफेशनल्स की डिमांड काफी ज्यादा बढ़ती जा रही है। आइए आपको बताते हैं AI स्पेशलिस्ट बनने के लिए कौन से कोर्स कर सकते हैं।

ज्ञानेंद्र कुमार दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर, बीबीडी यूनिवर्सिटी, लखनऊ

### करियर का बेस्ट ऑप्शन

AI का मूल उद्देश्य ऐसी मशीनें और सिस्टम विकसित करना है, जो इंसानों की तरह सोच सकें, निर्णय ले सकें और अनुभव से सीख सकें। यही कारण है कि हर सेक्टर में AI स्पेशलिस्ट की मांग लगातार बढ़ रही है। कम एक्सपर्ट्स और अधिक डिमांड के चलते इस फील्ड में सैलरी पैकेज भी काफी आकर्षक हो चुके हैं। तकनीक के इस दौर में AI न केवल वर्तमान की जरूरत है, बल्कि भविष्य की रीढ़ भी है, जो युवा आज AI की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं, उनके लिए यह क्षेत्र स्थिरता, सम्मान और बेहतरीन अवसरों से भरा हुआ साबित हो सकता है।

### AI Specialist के लिए बेस्ट कोर्स

अगर आप इस फील्ड में कदम रखना चाहते हैं, तो सबसे पहले कंप्यूटर और मैथ्स की बेसिक समझ होनी चाहिए। इन कोर्सों में आपको मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, Neural Networks, डाटा एनालिसिस, प्रोग्रामिंग लैंग्वेज जैसे पायथन का ज्ञान दिया जाता है। इन स्किल्स की मदद से आप कंपनियों में डेटा एनालिसिस, AI मॉडल डेवलपमेंट या मशीन लर्निंग प्रोजेक्ट्स पर काम कर सकते हैं।

### ग्रेजुएशन लेवल कोर्स
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में बीटेक
- डेटा साइंस में बीएससी
- AI स्पेशलाइजेशन के साथ कंप्यूटर साइंस में बीटेक
- पोस्ट ग्रेजुएशन लेवल कोर्स
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में पीजी डिप्लोमा
- AI और मशीन लर्निंग में MTech या AI और डीप लर्निंग में सर्टिफिकेट कोर्स



### सैलरी और करियर ग्रोथ

AI Specialist की शुरुआती में एक सम्मानजनक सैलरी मिल जाती है। फ्रेशर्स को औसतन 8 से 12 लाख रुपये प्रति वर्ष तक की सैलरी मिल सकती है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता जाता है, वैसे ही सैलरी में ग्रोथ होती जाती है। एक अनुभवी AI Specialist को 20 से 30 लाख रुपये या उससे ज्यादा का सालना पैकेज मिल जाता है। भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी AI इंजीनियर्स और डेटा साइंटिस्ट्स की जबरदस्त डिमांड है।